अध्याय 3

मांग की अवधारणा
(Concept of Demand)

क्या हम कभी यह विचार करते हैं कि हमारी वस्तुओं की कीमत कैसे निर्धारित होती है, और समय के साथ हमारी इच्छा, एवं आवश्यकताओं में क्यों और कैसे परिवर्तन आता है। इस अध्याय का उद्देश्य अर्थप्रणाली का आधार स्तम्भ मांग के अर्थ, इसको प्रभावित करने वाले घटक तथा इसमें होने वाले परिवर्तन को समझाना है। व्यक्तिगत और बाजार दोनों स्तर पर मांग अवधारणा का अध्ययन आवश्यक है।

मांग–

मांग में तीन तत्व सम्मिलित होते हैं– 1. किसी वस्तु की इच्छा या आवश्यकता, 2. इस वस्तु को खरीदने के लिए मुद्रा या पैसा, 3. इस वस्तु को खरीदने के लिए पैसा खर्च करने की इच्छा।

अगर आप किसी वस्तु की इच्छा कर रहे हैं लेकिन आप के पास उसे खरीदने के लिए पैसा नहीं है तो यह मांग नहीं होगी। साथ ही अगर आप के पास पैसा है तो भी इस वस्तु को खरीदने के लिए पैसा खर्च करने की इच्छा भी होनी चाहिए।

मांग सर्वथा कीमतों के साथ सम्बन्धित रहती है। ऐसा कहा जाता है कि किसी विशिष्ट कीमत पर किसी वस्तु की मांग अमुक है।

कीमत से तात्पर्य मांग प्रति इकाई समय से है। मांग को निम्न प्रकार से परिभाषित कर सकते हैं।

किसी दी हुई कीमत पर किसी वस्तु की मांग उस मात्रा से है जो कि उस नियत समय पर उस दी हुई कीमत पर खरीदा जाएगा।

मांग से तात्पर्य उन विभिन्न वस्तुओं की मात्रा से है, जो उपभोक्ता विभिन्न कीमतों पर खरीदने के लिए तत्पर रहता है। मांग की अवधारणाा के साथ स्थान, समय व कीमत तीनों आते है।

बाजार मांग –

प्रत्येक बाजार में किसी वस्तु के अनेक उपभोक्ता होते हैं। एक सरल उदाहरण द्वारा हम स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं माना कि अनार की कीमत 60रु. प्रतिकिलो होने पर A उपभोक्ता की मांग 4 किलोग्राम है तथा B उपभोक्ता की मांग 3 किलोग्राम है। और अर्थव्यवस्था में माना दो ही उपभोक्ता है तो 60रु. प्रति किलोग्राम अनार की कीमत पर बाजार मांग दोनों उपभोक्ता द्वारा मांगी जाने वाले अनार की मात्रा के योग के बराबर होगी। अतः इस कीमत पर बाजार मांग (4 + 3 = 7 किलोग्राम) होगी।

अतः बाजार मांग से तात्पर्य है कि किसी दी हुई कीमत पर समस्त उपभोक्ताओं द्वारा मांगी जाने वाली वस्तु की मात्राओं का योग बाजार मांग कहलाता है। किसी उपभोक्ता वस्तु की मांग अनेक कारकों जैसे वस्तु की कीमत, उपभोक्ता की आय, उपभोक्ता की रुचि और अधिमान पर निर्भर करती है।

मांग अनुसूची–

मांग अनुसूची बनाते समय सिर्फ वस्तु की स्वयं की कीमत में परिवर्तन के प्रभाव को वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा पर प्रभाव को सारणी रूप में दिखाया जाता है। इसके अलावा सभी कारक जो मांग को प्रभावित करते हैं उन्हें स्थिर मान लेते हैं।

मांग अनुसूची के दो प्रकार हैं–

(1.) वैयक्तिक मांग अनुसूची

(2.) बाजार मांग अनुसूची

(1.) वैयक्तिक मांग अनुसूची :–

किसी एक निश्चित समय में एक व्यक्तिगत उपभोक्ता द्वारा विभिन्न कीमतों पर मांगी जाने वाली वस्तु की मात्रा को सारणी रूप में प्रकट करने पर वैयक्तिक मांग अनुसूची प्राप्त होती है।

तालिका 3.1 वैयक्तिक मांग अनुसूची

प्रति किलोग्राम कीमत ₹	अनार की मांगी जाने वाली मात्रा
25	1000 gm.
50	750 gm.
75	500 gm.
100	250 gm.

उपरोक्त सूची में एक काल्पनिक वैयक्तिक मांग अनुसूची को बनाया गया है। जब अनार की कीमत 25रु. प्रति किलोग्राम है तो किसी एक उपभोक्ता द्वारा अनार की मांगी जाने वाली मात्रा 1 किलोग्राम है। जब अनार की कीमत बढकर 50रु. हो जाती है तो अनार की मांगी जाने वाली मात्रा घटकर 750 ग्राम हो जाती है। जब अनार की कीमत बढकर 100रु. प्रति किलोग्राम होती है तो अनार की मांगी जाने वाली मात्रा 250 ग्राम है।

(2.) बाजार मांग अनुसूची :–

किसी एक निश्चित समय में सभी उपभोक्ताओं द्वारा विभिन्न कीमतों पर मांगी जाने वाली वस्तुओं की मात्रा का योग

सारणी के रूप में दर्शाये जाने पर बाजार मांग अनुसूची प्राप्त होती है। सरलता के रूप में हम यह मानते हैं कि बाजार में दो उपभोक्ता A व B हैं तथा विभिन्न कीमतों पर उनके द्वारा मांगी जाने वाली वस्तु अनार की कीमत निम्न सारणी के अनुसार है। बाजार मांग दोनों उपभोक्ताओं द्वारा विभिन्न कीमतों पर मांगी जाने वाली अनार की मात्रा का योग है।

तालिका 3.2

प्रति किलोग्राम कीमत ₹	**A** द्वारा अनार की मांगी जाने वाली मात्रा	**B** द्वारा अनार की मांगी जाने वाली मात्रा	बाजार मांग **3=1+2**
25	1000 ग्राम	1100 ग्राम	2100 ग्राम
50	750 ग्राम	800 ग्राम	1550 ग्राम
75	500 ग्राम	475 ग्राम	975 ग्राम
100	250 ग्राम	300 ग्राम	550 ग्राम

उपरोक्त तालिका में बाजार मांग A व B उपभोक्ताओं द्वारा विभिन्न कीमतों पर मांगी जाने वाली अनार की मात्रा का योग है।

मांग वक्र (Demand Curve) –

मांग वक्र मांग अनुसूची के आधार पर निर्मित किया जाता है। एक मांग वक्र वही जानकारी प्रदान करता है जो मांग की अनुसूची प्रदान करती है लेकिन ये उसे एक रेखाचित्र के रूप में दर्शाता है।

मांग वक्र वह वक्र है जो विभिन्न कीमतों पर किसी उपभोक्ता द्वारा मांगी जाने वाली वस्तु की मात्रा का कीमत से विपरीत सम्बन्ध बताता है।

मांग वक्र दो प्रकार के होते हैं।

(1.) वैयक्तिक मांग वक्र

(2.) बाजार मांग वक्र

(1.) वैयक्तिक मांग वक्र :– किसी एक नियत समय पर एक व्यक्तिगत उपभोक्ता द्वारा विभिन्न कीमतों पर मांगी जाने वाली मात्रा को ग्राफ के रूप में चित्रित करने पर हमें वैयक्तिक मांग वक्र प्राप्त होता है। निम्न चित्र मांग वक्र को दर्शाता है।

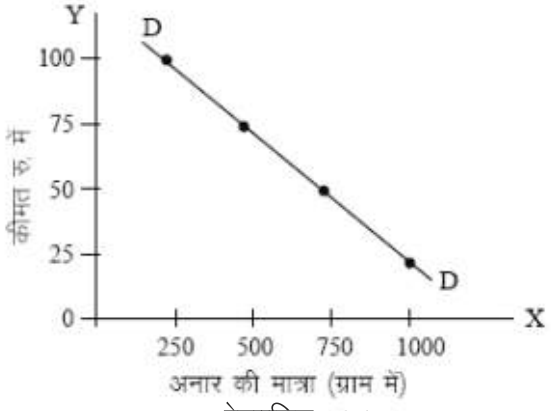

रेखाचित्र 3.1

इसमें DD मांग वक्र है। पूर्व में प्राप्त वैयक्तिक मांग अनुसूची के आंकडों को ग्राफ में चित्रित करने पर हमें DD मांग वक्र प्राप्त होता है जो यह बतलाता है कि जैसे जैसे अनार की कीमत बढ़ती है, वैसे वैसे उपभोक्ता द्वारा मांगी जाने वाली मात्रा में कमी होती है अतः वस्तु की कीमत व उपभोक्ता द्वारा इस कीमत पर मांगी जाने वाली मात्रा के बीच प्रतिलोम (Inverse) सम्बन्ध होता है।

(2.) बाजार मांग वक्र :–

किसी एक नियत समय में सभी उपभोक्ताओं द्वारा विभिन्न कीमतों पर मांगी जाने वाली मात्राओं को ग्राफ के रूप में चित्रित करने पर हमें बाजार मांग वक्र प्राप्त होता है। निम्न चित्र बाजार मांग वक्र को दर्शाता है।

पूर्व में प्राप्त बाजार मांग अनुसूची के आंकड़ों को ग्राफ में चित्रित करने पर हमें बाजार मांग वक्र DD प्राप्त होता है।

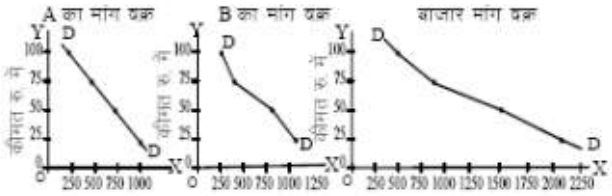

रेखाचित्र 3.2

बाजार मांग वक्र वैयक्तिक मांग वक्रों के क्षैतिज योग (horizontal summation) से प्राप्त होता है चित्र में दी हुई कीमत 25रु. पर A की मांग 1000 ग्राम तथा इसी कीमत पर B की मांग 1100 ग्राम है तो इस कीमत पर बाजार मांग 2100 ग्राम (1000+1100) हो। इसी तरह से अन्य कीमतों पर भी बाजार मांग को निकाला जाता है। इस तरह विभिन्न कीमतों पर बाजार मांग को ग्राफ के निरूपित करने पर बाजार मांग प्राप्त होती है।

मांग के निर्धारक तत्व

मांग के निर्धारक तत्व निम्न हैं :–

(1.) वस्तु की स्वयं की कीमत

(2.) उपभोक्ता की आय

(3.) संबधित वस्तुओं (प्रतिस्थापन या पूरक वस्तुएँ) की कीमत

(4.) उपभोक्ता की पसन्द, रूचि

(5) भविष्य के बारे में उपभोक्ता की कीमत प्रत्याशाएं

इसे गणितीय रूप में निम्न प्रकार से लिख सकते है।

$D_n = f(P_n P_1 P_2 P_3 \ldots P_{n-1}, Y, T, E)$

इसे मांग फलन के रूप में जाना जाता है।

इसके अनुसार वस्तु n की मांग उसकी कीमत P_n अन्य वस्तुओं की कीमत $[P_1 P_2 \ldots P_{n-1}]$, उपभोक्ता की आय (Y) उपभोक्ता की पसन्द (T), भविष्य के बारे में उपभोक्ता की कीमत

प्रत्याशाएं (E) आदि पर निर्भर करती है।

सर्वप्रथम हम वस्तु की कीमत व उसकी मांगी जाने वाली मात्रा के बीच सम्बन्ध को जानते हैं।

(1.) कीमत व वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा में सम्बन्ध :

अन्य बातों के स्थिर रहने पर, (cebrius paribus) वस्तु की कीमत व उसकी मांगी जाने वाली मात्रा में प्रतिलोम सम्बन्ध होता है।

(2.) वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा व संबधित वस्तुओं की कीमतों के मध्य सम्बन्ध :

इसके अन्तर्गत हम दो प्रकार की वस्तुओं का विवेचन कर सकते हैं।

1. पूरक वस्तुएं

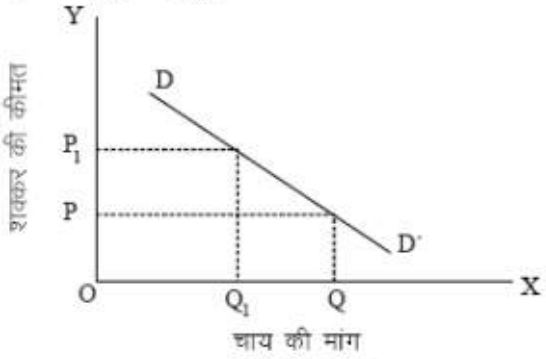

रेखाचित्र 3.3

पूरक वस्तु शक्कर की कीमत OP से बढकर OP_1 होने पर चाय की मांग OQ से घटकर OQ_1 हो जाती है।

अतः पूरक वस्तु में मांग वक्र का ढाल ऋणात्मक होता है।

2. स्थानापन्न वस्तुएं

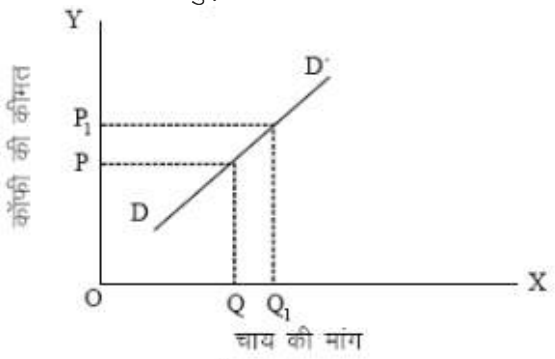

रेखाचित्र 3.3

कॉफी की कीमत OP से बढकर OP_1 होने पर चाय की मांग OQ से बढ़कर OQ_1 होगी।

अतः स्थानापन्न वस्तुओं में मांग वक्र धनात्मक होता है।

वस्तुएं एक दूसरे की पूरक हो सकती है जैसे टेनिस का बल्ला व टेनिस की गेंद, ईंटे व सीमेंट। इसके अनुसार यदि टेनिस की गेंद की कीमत बढ़ती है तो इसकी मांग कम होगी तथा साथ ही टेनिस के बल्ले की मांग भी कम होगी। अतः पूरक वस्तुओं में मांग वक्र का ढाल ऋणात्मक होता है।

इसके विपरीत वस्तुएं एक दूसरे की स्थानापन्न होती हैं जैसे चाय व कॉफी। अगर कॉफी की कीमतें बढ़ती हैं, जबकि चाय की कीमत स्थिर रहती है तो लोग चाय की मांग बढा देंगे और कॉफी की मांग कम हो जाएगी। अतः स्थानापन्न वस्तुओं में मांग वक्र धनात्मक होता है।

(3.) मांग व आय का सम्बन्ध :–

जब उपभोक्ता की आय बढ़ती है तो सामान्य रूप से वस्तु की मांग भी बढ़ती है। विलासिता की वस्तुएं इसके अन्तर्गत आती हैं। अतः वस्तु की मांग व उपभोक्ता की आय के बीच में धनात्मक सम्बन्ध होता है।

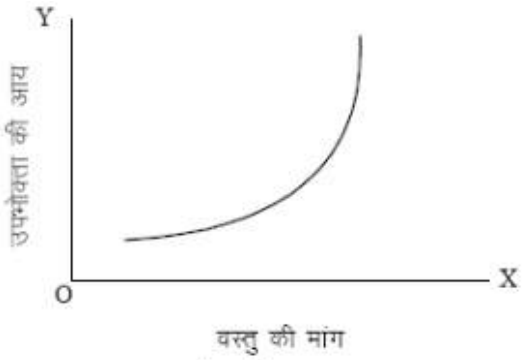

रेखाचित्र 3.4

कुछ वस्तुएं ऐसी होती हैं जिनकी मांग आय के बढ़ने के साथ कुछ समय तक बढ़ती है, उसके बाद आय के बढ़ने के बाद मांग घटती है। ऐसा घटिया वस्तुओं में होता है। अनाज, ज्वार, बाजरा, व मक्का की मांग को हम इस तरह से देख सकते हैं।

(4.) मांग का उपभोक्ता की पसन्द से सम्बन्ध :–

वस्तुओं की मांग उपभोक्ता की रुचि और अधिमान पर भी निर्भर करती है। ये नए अविष्कार, विज्ञापनों आदि से प्रभावित होती है। उस स्थिति में किसी वस्तु की मांग पर उपभोक्ता की पसन्द का प्रभाव पड़ता है।

(5.) भविष्य के बारे में उपभोक्ता की प्रत्याशाएं :–

अगर उपभोक्ता को ऐसा लगता है कि भविष्य में किसी वस्तु के स्टॉक में कमी होगी तो वे उस वस्तु की वर्तमान मांग बढ़ा देंगे। इसके विपरीत भविष्य में किसी वस्तु की कीमत कम होने की संभावना है तो उपभोक्ता उसका वर्तमान उपभोग घटा देगा।

इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी कारक हैं जो बाजार की मांग को प्रभावित करते हैं, वे निम्नानुसार है :–

(1.) किसी देश की जनसंख्या का आकार व संरचना

(2.) राष्ट्रीय आय का वितरण

(1.) जनसंख्या का आकार एवं संरचना :

अगर किसी देश की जनसंख्या ज्यादा होगी तो FMCG (Fast moving consumer goods) वस्तुओं की मांग ज्यादा होगी

और अगर जनसंख्या का बहुत बड़ा हिस्सा युवाओं का है तो Life style products मोबाईल आदि की मांग अधिक होगी।

(2.) राष्ट्रीय आय का वितरण :

अगर देश में आय का वितरण असमान है तो विलासिता की वस्तुओं की मांग ज्यादा होगी और आय का समान वितरण है तो आवश्यक वस्तुओं की भी मांग ज्यादा होगी।

मांग मात्रा में परिवर्तन एवं मांग में परिवर्तन :–

किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन (कमी अथवा वृद्धि) से उस वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा में परिवर्तन को एक ही मांग वक्र पर चलने से दिखाया जाता है।

जबकि किसी वस्तु की कीमत के अतिरिक्त अन्य कारक जैसे उपभोक्ता की आय में बढ़ोतरी या कमी उपभोक्ता की रुचि व पसन्द में परिवर्तन या प्रतिस्थापन वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन के कारण मांग वक्र का उपर या नीचे की ओर विवर्तित होना मांग में परिवर्तन कहलाता है।

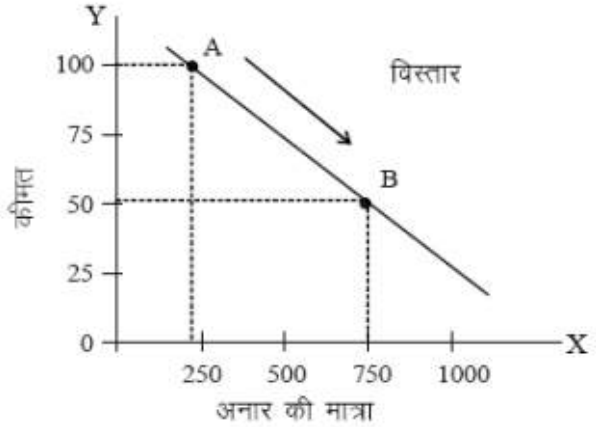

चित्र अ मांग का विस्तार

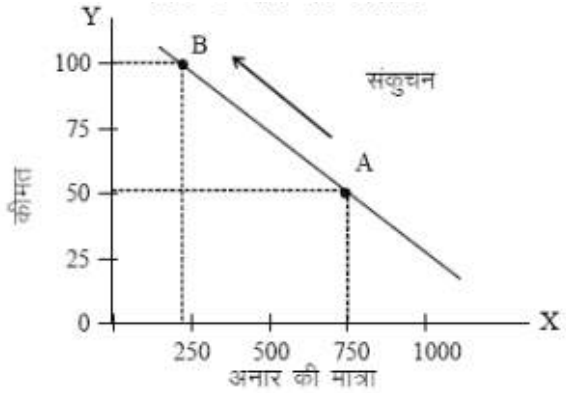

चित्र ब मांग का संकुचन

रेखाचित्र 3.5

अन्य बातें समान रहने पर जब केवल कीमत में कमी के कारण वस्तु की अधिक मात्रा खरीदी जाती है तो उसे मांग का विस्तार कहते है। इसमें हम उसी मांग वक्र पर ऊपर से नीचे की ओर गति करते है।

चित्र (अ) के अनुसार जब अनार की कीमत 100रु. प्रति किलोग्राम है तब उपभोक्ता द्वारा मांगी जाने वाली मात्रा 250 ग्राम है जब अनार की कीमत घटकर 50रु. प्रति किलोग्राम हो जाती है तब अनार की मांग 250 ग्राम से बढकर 750 ग्राम हो जाती है। इसे मांग की मात्रा में वृद्धि कहते हैं। A से B तक का चलन मांग मात्रा के विस्तार (Expansion of Demand) को दर्शाता है।

चित्र (ब) के अनुसार जब अनार की कीमत 50 रु. प्रति किलोग्राम है तो अनार की मांगे जाने वाली मात्रा 750 ग्राम है।

अन्य बातें समान रहने पर जब केवल कीमत में वृद्धि होने पर वस्तु की कम मात्रा खरीदी जाती है तो उसे मांग का संकुचन कहते है। इसमें उसी मांग वक्र पर नीचे से ऊपर की ओर गति करते है। जब अनार की कीमत 50रु. प्रति किलोग्राम से बढ़कर 100रु. प्रति किलोग्राम हो जाती है तो वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा घटकर 250 ग्राम हो जाती है। इसे मांग का संकुचन (Contraction of demand) कहते हैं या मांग की मात्रा में कमी कहते हैं।

मांग वक्र में विर्वतन :–

मांग वक्र में दो प्रकार के विर्वतन होते हैं

(1.) मांग वक्र का दाहिनी अथवा आगे की ओर खिसकना

(2.) मांग वक्र का बाएं अथवा नीचे की ओर खिसकना

(1.) मांग वक्र का दाहिनी ओर आगे की तरफ खिसकना

रेखाचित्र 3.7 के अनुसार किसी वस्तु की स्वयं की कीमत अपरिवर्तित रहते हुए यदि उपभोक्ता की आय में वृद्धि के फलस्वरूप प्रारम्भिक मांग वक्र DD बदल कर D_1D_1 उपर की ओर दाहिने ओर खिसक जाता है इसे मांग में वृद्धि (Increase in demand) कहते हैं।

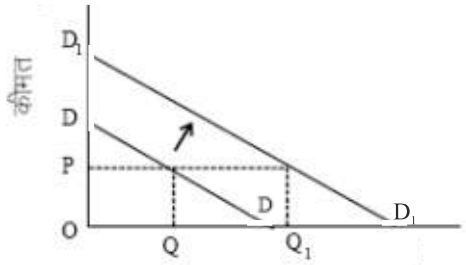

रेखाचित्र 3.6

OP कीमत पर मांग मात्रा OQ से OQ_1 हो जाती है।

(2.) मांग वक्र का बाएं अथवा नीचे की ओर खिसकना

रेखाचित्र 3.8 के अनुसार किसी वस्तु की स्वयं की कीमत अपरिवर्तित रहते हुए उपभोक्ता की आय में कमी के फलस्वरूप प्रारम्भिक मांग वक्र DD से बायीं ओर नीचे की ओर खिसककर D_1D_1 हो गया है इसे (Decrease in demand) या मांग की कमी कहते है।

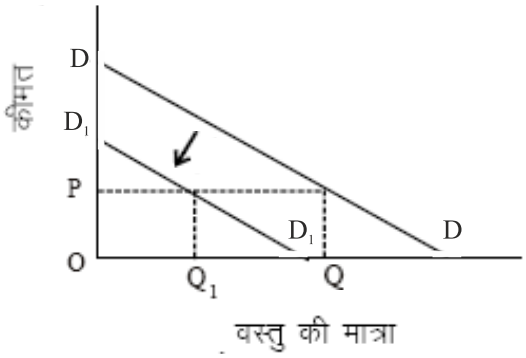

रेखाचित्र 3.7

OP कीमत पर मांग OQ से घटकर OQ_1 हो जाती है।

मांग में वृद्धि या मांग में कमी, उपभोक्ता की आय के अतिरिक्त स्थानापन्न वस्तुओं की कीमतों में बदलाव, पसन्द व अभिरुचि में परिवर्तन तथा वस्तुओं की कीमतों के बारे में भावी प्रत्याशा पर भी निर्भर करती है।

मांग के नियम (Law of demand) :–

एक वस्तु की मांग पर अनेक घटकों का प्रभाव पड़ता है। जैसे वस्तु की स्वयं की कीमत, उपभोक्ता की आय, संबंधित वस्तुओं की कीमतें, उपभोक्ता की पसन्द, भविष्य के बारे में उपभोक्ता की कीमत प्रत्याशाएं।

मांग का नियम यह बतलाता है कि 'अन्य बातों के स्थिर रहने पर', एक वस्तु की कीमत के घटने पर उस वस्तु की मांग की मात्रा में वृद्धि होगी और कीमत के बढ़ने पर उसकी मांग की मात्रा में गिरावट आएगी।

इसे निम्न चित्र द्वारा समझाया जा सकता है।

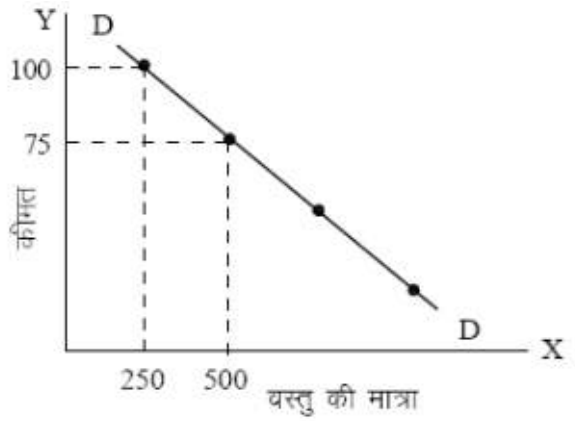

रेखाचित्र 3.8

रेखाचित्र 3.8 में Y अक्ष पर अनार की प्रति किलोग्राम कीमत दी गई है तथा X अक्ष पर अनार की इन कीमतों पर मांगी जाने वाली मात्रा दी गई है।

जब अनार की कीमत 100 रु. प्रति किलोग्राम है तब उपभोक्ता द्वारा अनार की मांगी जाने वाली मात्रा 250 ग्राम है। कीमत के घटकर 75रु. प्रति किलोग्राम होने पर अनार की मांगी जाने वाली मात्रा बढकर 500 ग्राम हो जाती है।

अतः हम देखते है कि' अन्य बातों के स्थिर रहने पर' वस्तु की कीमत में कमी आने से उपभोक्ता द्वारा मांगी जाने वाली मात्रा बढ़ती है। अतः कीमत व वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा में प्रतिलोम संबंध होता है।

मांग के नियम की व्युत्पत्ति –

किसी वस्तु की कीमत और उसकी मांगी जाने वाली मात्रा के प्रतिलोम सम्बन्ध या मांग के नियम को निम्न दो तरीकों से व्युत्पन्न किया जा सकता है–

(1.) सीमान्त उपयोगिता = कीमत के सम्बन्ध से

(2.) सम सीमान्त उपयोगिता नियम

$$\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y} \quad \text{से}$$

(1.) सीमान्त उपयोगिता – कीमत

उपभोक्ता संतुलन की दशा में उतनी मात्रा की मांग करता है जहां पर MU = P की शर्त पूरी होती है।

Case 1 यदि MU > P

यदि किसी वस्तु की कीमत घटती है तो उसकी सीमान्त उपयोगिता कीमत से अधिक हो जाती है और वह उपभोक्ता को उस वस्तु की अधिक खरीद के लिए प्रोत्साहित करती है अतः जब किसी वस्तु की कीमत घटती है तो उपभोक्ता की उस वस्तु की मांग बढ़ती है और ऐसा तब तक होता है जब तक सीमान्त उपयोगिता पुनः घटकर कीमत के बराबर नहीं हो जाती है।

Case 2 यदि MU < P

यदि किसी वस्तु की कीमत बढ़ जाती है तो उसकी सीमान्त उपयोगिता कीमत से कम हो जाती है। अतः उपभोक्ता तब तक किसी वस्तु की मांग घटाएगा जब तक सीमान्त उपयोगिता बढकर कीमत के बराबर न हो जाए। अतः कीमत के बढ़ने पर मांग घटती है।

(2.) सीमान्त उपयोगिता नियम –

इस नियम के अनुसार उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में अपनी सीमित आय को इस तरह से खर्च करता है ताकि वस्तुओं की सीमान्त उपयोगिता का उनकी कीमत के साथ अनुपात समान रहता है।

दो वस्तुओं X व Y के संदर्भ में

उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में

$$\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y}$$

Case (1.) इस साम्य की स्थिति में यदि X की कीमत (P_x) गिरती है तो $\frac{MU_x}{P_x} > \frac{MU_y}{P_y}$ ऐसी स्थिति में उपभोक्ता Y वस्तु की तुलना में X वस्तु की अधिक सीमान्त उपयोगिता पा रहा है अतः वह X की ज्यादा इकाइयां खरीदेगा तथा Y की कम खरीदेगा।

अतः यह बताता है कि जब X की कीमत घटती है तो वह X की अधिक मांग करेगा। और वह X की मांग तब तक करता रहेगा जब तक पुनः $\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y}$

Case (2.) यदि की कीमत X बढ़ती है तब $\frac{MU_x}{P_x} < \frac{MU_y}{P_y}$

ऐसी स्थिति में उपभोक्ता को Y वस्तु से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता X वस्तु से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता से अधिक मिलती है। अतः वह X की मांग कम करेगा तथा Y की ज्यादा। अतः X की कीमत बढने पर वह X की मांग कम करेगा।

अतः X वस्तु की कीमत व उसकी मांग के बीच विलोम सम्बन्ध है

वह Y की मांग तब तक करता रहेगा जब पुनः $\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y}$

मांग के नियम के लागू होने के कारणः—

(1.) ह्रासमामान सीमान्त उपयोगिता का नियम :—

इस नियम के अनुसार जैसे जैसे उपभोक्ता एक वस्तु की अधिक से अधिक इकाइयां खरीदता है तो उत्तरोत्तर खरीद की मात्रा से सीमान्त उपयोगिता उत्तरोत्तर घटती जाती है। अगर उपभोक्ता को अधिक संतोष प्राप्त होता है तो वह उसकी कीमत भी अदा करेगा।

अतः उस वस्तु की उत्तरोत्तर खरीद के लिए वह समान कीमत अदा नहीं करेगा बल्कि कम कीमत अदा करेगा।

(2.) प्रतिस्थापन प्रभाव :—

प्रतिस्थापन प्रभाव से तात्पर्य है यदि कोई वस्तु सापेक्षतया सस्ती हो जाती है तो वह मंहगी वस्तु के लिए प्रतिस्थापित की जाती है। उदाहरण के लिए जैसे X वस्तु की कीमत Y वस्तु की तुलना में कम हो जाती है तो सस्ती वस्तु X को मंहगी वस्तु Y के लिए प्रतिस्थापित किया जाता है अर्थात् X वस्तु की मांग बढ़ जाती है।

(3.) आय प्रभाव :—

आय प्रभाव, उस प्रभाव को कहते हैं जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उपभोक्ता की वास्तविक आय में भी परिवर्तन होता है और इसका प्रभाव वस्तु की मांग पर पड़ता है।

जब किसी वस्तु की कीमत घटती है उपभोक्ता की क्रय शक्ति या वास्तविक आय बढ़ जाती है और वह समान मौद्रिक आय से उस वस्तु की ज्यादा मात्रा खरीद सकता है। कीमत प्रभाव इन दो सम्मिलित प्रभावों, प्रतिस्थापन प्रभाव व आय प्रभाव का योग होता है।

(4.) जब किसी वस्तु की कीमत घटती है तो कई नये उपभोक्ता जो पूर्व में उस वस्तु को नहीं खरीद पा रहे थे वे अब इसे खरीद पाने की स्थिति में हो जाते है और पुराने उपभोक्ता घटी हुई कीमत पर अपनी उपभोग की मात्रा को बढ़ा देते हैं। इस प्रकार वस्तु की कुल मांग में वृद्धि होती है।

(5.) जब किसी वस्तु की कीमत घटती है तो उस वस्तु का उपयोग अन्य उपयोगों के लिए भी बढ़ता है। इसके फलस्वरूप कीमत के घटने पर मांग भी बढ़ती है।

मांग के नियम के अपवाद :—

मांग के नियम के अपवाद जानने का आशय उन दशाओं को जानना होता है जिसमें मांग वक्र ऊपर की ओर जाते है। वहां मांग का नियम लागू नहीं होता है।

(1.) गिफिन वस्तुएं :— ये वस्तुएं घटियाँ वस्तुओं की वह किस्म है, जिसमें इन वस्तुओं की कीमतें बढ़ने पर इनकी मांग बढ़ती है और कीमतों के घटने पर मांग भी घट जाती है।

ज्वार व बाजरा गिफिन वस्तुओं का उदाहरण है। इन वस्तुओं की कीमत घटने पर उपभोक्ता द्वारा इन वस्तुओं का उपभोग घटा दिया जाता है। अतः गिफिन वस्तुओं में मांग का नियम लागू नहीं होता है।

(2.) प्रतिष्ठात्मक प्रतीक वाली वस्तुओं का उपभोग उनकी कीमत अधिक होने पर अधिक होता है। जैसे— हीरे पन्ने के आभूषण आदि।

(3) वस्तु की भावी कीमत में परिवर्तन की संभावना।

(4) उपभोक्ता की अज्ञानता एवं गलत धारणाएं।

(5) जीवन की अनिवार्य वस्तुओं की मांग।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- किसी एक नियत समय पर एक व्यक्तिगत उपभोक्ता द्वारा विभिन्न कीमतों पर मांगी जाने वाली मात्रा को वैयक्तिक मांग कहते है।
- किसी एक नियत समय में सभी उपभोक्ताओं द्वारा विभिन्न कीमतों पर मांगी जाने वाली मात्रा बाजार मांग कहलाती है।
- किसी एक नियत समय में एक व्यक्तिगत उपभोक्ता द्वारा विभिन्न कीमतों पर मांगी जाने वाली वस्तु की मात्रा को सारणी के रूप में प्रकट करने पर वैयक्तिक मांग अनुसूची प्राप्त होती है।

- किसी एक नियत समय में सभी उपभोक्ताओं द्वारा विभिन्न कीमतो पर मांगी जाने वाली वस्तुओं की मात्रा के योग को सारणी के रूप में प्रयुक्त करने पर बाजार मांग अनुसूची प्राप्त होती है।
- मांग फलन किसी वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा तथा इसे प्रभावित करने वाले कारकों पर निर्भर करती है। संकेतों में $D_x = f(P_x, I, ...P_y, T)$
इससे तात्पर्य यह है कि जब उपभोक्ता की आय, संबधित वस्तुओं की कीमत P_y तथा पसन्द T को स्थिर रखा जाता है तो X वस्तु की मांग उसकी स्वयं की कीमत P_x का प्रतिलोम फलन होती है।
- मांग का नियम किसी वस्तु की कीमत और उसकी मांगे जाने वाली मात्रा के प्रतिलोभ सम्बन्ध को बतलाता है। जबकि अन्य कारकों को स्थिर रखा जाता है।
- किसी वस्तु की कीमत के घटने पर इस वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा के बढ़ने को मांग का विस्तार कहते हैं जब अन्य कारक जो मांग को प्रभावित करते हैं उन्हें स्थिर माना जाता है।
- किसी वस्तु की कीमत के बढ़ने पर उस वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा के घटने को मांग का संकुचन कहते है। जब अन्य कारको को स्थिर रखा जाता है।
- किसी वस्तु की कीमत के अतिरिक्त किसी अन्य कारकों जैसे आय आदि में वृद्धि से मांग वक्र के दाहिने उपर की ओर खिसकना मांग में वृद्धि कहलाता है।
- किसी वस्तु की कीमत के अतिरिक्त किसी अन्य कारकों जैसे आय आदि में कमी के फलस्वरूप मांग वक्र के नीचे दाहिने और खिसकना मांग में कमी कहलाता है।
- वे वस्तुएं जिनकी मांग उपभोक्ता की आय बढ़ने से बढ़ती है उसे सामान्य वस्तु कहते हैं।
- वे वस्तुएं जिनकी मांग उपभोक्ता की आय के बढ़ने के फलस्वरूप घटती है। उसे घटिया वस्तु कहते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

(1) वस्तु की मांग, वस्तु की कीमत एवं उसकी मांगी जाने वाली मात्रा के बीच ..... सम्बन्ध को बताती है।
(अ) धनात्मक (ब) अनन्त
(स) शून्य (द) प्रतिलोम

(2) बाजार मांग वक्र व्यक्तिगत मांग वक्रों के .....जोड़ से प्राप्त होता है।
(अ) क्षैतिज (ब) लम्बवत
(स) तिरछी (द) इनमें से कोई नहीं

(3) मांग का विस्तार व संकुचन निम्न में से किसके द्वारा होता है।
(अ) उस वस्तु की कीमत में बदलाव के कारण
(ब) अन्य वस्तुओं की कीमत में बदलाव के कारण
(स) उपभोक्ता की रुचि व पसन्द बदलने पर
(द) उपभोक्ता की आय में बदलाव के कारण

(4) यदि किसी वस्तु की मांग फलन $D_x = 35 - 4P_x$ से दिया जाता है 5 रु प्रति इकाई कीमत पर वस्तु की मांग होगी–
(अ) 20 (ब) 15
(स) 35 (द) 0

(5.) मांग का नियम कौनसी वस्तुओं में लागू नहीं होता है–
(अ) गिफिन वस्तुओं (ब) सामान्य वस्तुओं
(स) स्थानापन्न वस्तुओं (द) पूरक वस्तुओं

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. गिफिन वस्तुओं का अर्थ बताइये।
2. मांग के नियम को परिभाषित कीजिए।
3. वस्तु की वैयक्तिक मांग वक्रों से बाजार मांग वक्र को कैसे निकाला जाता है।?
4. यदि उपभोक्ता की आय बढ़ने पर वह किसी वस्तु की मांग की मात्रा को बढ़ाता है तो वह वस्तु कैसी होगी?
5. यदि मांग वक्र आय के बढ़ने के फलस्वरूप नीचे बायीं ओर खिसक जाता है तो यह क्या कहलाएगा?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. किसी एक मांग वक्र पर चलन तथा मांग वक्र में विवर्तन को चित्र बनाकर समझाइए।
2. सामान्य वस्तु एवं घटिया वस्तु में अन्तर को स्पष्ट कीजिए।
3. यदि X वस्तु एवं Y वस्तु प्रतिस्थापन वस्तु है तो Y वस्तु की कीमत में कमी का X वस्तु की मांग पर क्या प्रभाव होगा। चित्र की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न–

1. मांग के नियम को सारणी व चित्र बनाकर समझाइए।
2. एक मांग वक्र के लिए मांग में परिवर्तन एवं मांग मात्रा में परिवर्तन में अन्तर स्पष्ट करो।
3. किसी वस्तु की मांग पर निम्न के प्रभाव को समझाइए
(1) आय में वृद्धि।
(2) संबधित वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि।

		उत्तर तालिका		
1	2	3	4	5
द	अ	अ	ब	अ